Ijfans International Journal Of Food And Nutritional Sciences
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal UGC CARE Listed (Group-I) Volume 15, Issue 02 Feb, 2026

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव: जांजगीर-चांपा जिले का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

लेखक

1. अमित कुमार उपाध्याय
शोधार्थी, शिक्षा, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

2. प्रो. डॉ. लुभावनी त्रिपाठी
प्रोफेसर, शिक्षा, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध-पत्र का प्रमुख उद्देश्य पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध तथा प्रभाव का विश्लेषण करना है। वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में महिला शिक्षक विद्यालयी अनुशासन, विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास, नैतिक संवेदनशीलता तथा अधिगम-संवर्धन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ऐसी स्थिति में उनका व्यक्तित्व केवल व्यक्तिगत गुणों का समूह न होकर शिक्षण-प्रभावशीलता, कक्षा-व्यवहार, सहकर्मियों से समन्वय, विद्यार्थियों के साथ संबंध तथा कार्य-संतोष का एक निर्णायक कारक बन जाता है। व्यक्तित्व के अंतर्गत आत्मविश्वास, भावनात्मक स्थिरता, सामाजिक समायोजन, उत्तरदायित्व-बोध, सहयोगात्मक दृष्टिकोण तथा नेतृत्व-क्षमता जैसे आयाम सम्मिलित होते हैं, जो शिक्षिका की कार्य-पद्धति और पेशागत संतुष्टि को गहराई से प्रभावित करते हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में मात्रात्मक, वर्णनात्मक तथा सहसंबंधात्मक शोध-विधि का उपयोग प्रस्तावित है। जांजगीर-चांपा जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर पर कार्यरत 200 महिला शिक्षकों को उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि द्वारा चयनित किया जाएगा। व्यक्तित्व के मापन हेतु मानकीकृत आयामी व्यक्तित्व सूची तथा कार्य संतुष्टि के मापन हेतु मानकीकृत कार्य संतुष्टि मापनी का उपयोग किया जाएगा। आँकड़ों के विश्लेषण हेतु औसत, मानक विचलन, पियर्सन सहसंबंध गुणांक तथा सरल रैखिक प्रतिगमन का प्रयोग किया जाएगा। अध्ययन से अपेक्षा है कि संतुलित, आत्मविश्वासी, भावनात्मक रूप से परिपक्व एवं सामाजिक रूप से समायोजित महिला शिक्षिकाएँ अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्टि का अनुभव करेंगी। यह शोध महिला शिक्षक-कल्याण, विद्यालयी वातावरण-सुधार तथा शिक्षा-प्रशासनिक नीतियों के लिए उपयोगी आधार प्रदान करेगा।

मुख्य शब्द: व्यक्तित्व, कार्य संतुष्टि, महिला शिक्षक, पूर्व माध्यमिक स्तर, सहसंबंध, प्रतिगमन विश्लेषण

1.0 प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रगति, सामाजिक उन्नति और सांस्कृतिक विकास का आधारभूत साधन है, तथा शिक्षक इस समूची प्रक्रिया के प्रमुख प्रेरक होते हैं। विद्यालयी जीवन में महिला शिक्षिकाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण मानी जाती है, क्योंकि वे न केवल ज्ञान के संप्रेषण का कार्य करती हैं, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक एवं नैतिक विकास में भी सक्रिय योगदान देती हैं। महिला शिक्षिका का व्यवहार, दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और व्यक्तित्व विद्यार्थियों के व्यक्तित्व-निर्माण पर गहरा प्रभाव डालता है।

व्यक्तित्व से आशय उन समस्त मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, व्यवहारिक और भावनात्मक विशेषताओं के समग्र संगठन से है, जो किसी व्यक्ति के आचरण, दृष्टिकोण, प्रतिक्रिया-शैली तथा जीवन-व्यवहार को दिशा प्रदान करता है। एक संतुलित, आत्मविश्वासी, सहयोगी और भावनात्मक रूप से परिपक्व महिला शिक्षिका न केवल कक्षा में प्रभावी शिक्षण करती है, बल्कि विद्यालय के समग्र वातावरण को भी सकारात्मक, प्रेरणादायक और मानवीय बनाती है। इसके विपरीत यदि व्यक्तित्व में अस्थिरता, संकोच, तनावशीलता, नकारात्मकता अथवा आत्म-अविश्वास जैसे गुण प्रबल हों, तो उसका प्रभाव शिक्षण की गुणवत्ता, सहकर्मी संबंधों और कार्य-संतुष्टि पर प्रतिकूल रूप से पड़ सकता है।

कार्य संतुष्टि एक ऐसी मनोवैज्ञानिक अवस्था है जिसमें व्यक्ति अपने कार्य, दायित्व, उपलब्धियों, संस्थागत वातावरण, मान्यता तथा पेशागत अनुभवों के प्रति संतोष का अनुभव करता है। महिला शिक्षकों के संदर्भ में कार्य संतुष्टि का संबंध केवल वेतन, सुविधाओं अथवा प्रशासनिक नीतियों से ही नहीं होता, बल्कि उनके आत्मबोध, व्यक्तित्व-संतुलन, सामाजिक समायोजन, भावनात्मक दृढ़ता और पेशागत आत्मविश्वास से भी गहराई से जुड़ा होता है। यदि महिला शिक्षिका अपने व्यक्तित्व की दृष्टि से संतुलित और आत्मनिर्भर है, तो वह अपने कार्य को अधिक प्रभावशीलता, सृजनशीलता और उत्साह के साथ संपन्न करती है।

वर्तमान समय में महिला शिक्षकों को दोहरी भूमिकाओं, पारिवारिक दायित्वों, विद्यालयी अपेक्षाओं, प्रशासनिक दबावों और सामाजिक उत्तरदायित्वों के बीच संतुलन स्थापित करना पड़ता है। ऐसे में उनके व्यक्तित्व की दृढ़ता और कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। विशेषकर पूर्व माध्यमिक स्तर पर, जहाँ विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आवश्यकताएँ अधिक संवेदनशील होती हैं, वहाँ महिला शिक्षिकाओं का व्यक्तित्व उनकी शिक्षण-भूमिका को और भी अधिक प्रभावशाली बनाता है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत शोध-पत्र जांजगीर-चांपा जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव ज्ञात करने का प्रयास करता है।

2.0 संबंधित साहित्य की समीक्षा

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तित्व और कार्य संतुष्टि के मध्य गहरा एवं बहुआयामी संबंध विद्यमान है। शेखावत (2017) ने अपने अध्ययन में पाया कि भावनात्मक स्थिरता, बहिर्मुखता और कर्तव्यनिष्ठा जैसे व्यक्तित्व आयाम शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। सक्सेना (2020) ने शिक्षण-अनुभव,

व्यक्तित्व गुण और कार्य संतुष्टि के सहसंबंधात्मक अध्ययन में निष्कर्ष निकाला कि आत्मविश्वासी और सामाजिक रूप से समायोजित शिक्षक अपने पेशे के प्रति अधिक संतुष्ट पाए गए। पिल्लई (2021) ने व्यक्तित्व और कार्य-संबंधी अनुभवों के संयुक्त प्रभाव का अध्ययन करते हुए यह प्रतिपादित किया कि सकारात्मक व्यक्तित्व संरचना कार्य संतोष के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्मा (2019) ने विद्यालयी शिक्षकों पर किए गए अध्ययन में पाया कि संतुलित व्यक्तित्व वाले शिक्षकों में तनाव कम तथा कार्य-संतोष अधिक पाया जाता है। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन न केवल प्रासंगिक, बल्कि आवश्यक भी है।

3.0 शोध-अंतर

उपलब्ध साहित्य से ज्ञात होता है कि व्यक्तित्व, कार्य संतुष्टि, शिक्षक-कल्याण तथा पेशागत व्यवहार पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, परंतु अधिकांश शोध सामान्य शिक्षक-समूहों पर केंद्रित हैं। महिला शिक्षकों को एक पृथक अध्ययन-समूह के रूप में लेकर उनके व्यक्तित्व का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। विशेषतः पूर्व माध्यमिक स्तर की महिला शिक्षिकाओं के संदर्भ में जिला-स्तरीय शोध का अभाव दृष्टिगोचर होता है। जांजगीर-चांपा जिले के संदर्भ में यह विषय और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ विद्यालयी परिवेश, सामाजिक अपेक्षाएँ तथा महिला शिक्षकों की पेशागत चुनौतियाँ विशिष्ट परिप्रेक्ष्य निर्मित करती हैं। अतः प्रस्तुत अध्ययन इस शोध-अंतर की पूर्ति करने का प्रयास करता है।

4.0 अध्ययन के उद्देश्य

1. पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व के स्तर का अध्ययन करना।
2. पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का उनकी कार्य संतुष्टि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

5.0 परिकल्पनाएँ

H01: पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का उनकी कार्य संतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

H02: पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व और उनकी कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

6.0 शोध-पद्धति

6.1 शोध की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन मात्रात्मक, वर्णनात्मक तथा सहसंबंधात्मक प्रकृति का है। अध्ययन का उद्देश्य महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व के स्तर का वर्णन करना तथा यह परीक्षण करना है कि व्यक्तित्व कार्य संतुष्टि को किस सीमा तक प्रभावित करता है।

6.2 शोध-विधि

इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाएगा। सर्वेक्षण विधि के माध्यम से चयनित प्रतिभागियों से मानकीकृत उपकरणों द्वारा आँकड़े संकलित किए जाएँगे। यह विधि इसलिए उपयुक्त है क्योंकि इससे पर्याप्त संख्या में महिला शिक्षकों से तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

6.3 जनसंख्या

अध्ययन की जनसंख्या जांजगीर-चांपा जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं निजी विद्यालयों में कार्यरत सभी नियमित महिला शिक्षक होंगी।

6.4 नमूना

अध्ययन हेतु कुल 200 महिला शिक्षक चयनित की जाएँगी। यह नमूना आकार अध्ययन को सांख्यिकीय दृष्टि से विश्वसनीय बनाने हेतु पर्याप्त माना गया है।

6.5 नमूना चयन विधि

नमूना चयन हेतु उद्देश्यपूर्ण नमूना चयन विधि का प्रयोग किया जाएगा। इस विधि के अंतर्गत उन महिला शिक्षकों का चयन किया जाएगा जो पूर्व माध्यमिक स्तर पर नियमित रूप से कार्यरत हैं तथा अध्ययन में भाग लेने के लिए सहमत हैं।

6.6 शोध में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चर: व्यक्तित्व
आश्रित चर: कार्य संतुष्टि

6.7 शोध उपकरण

1. **व्यक्तित्व मापन हेतु** – महेश भार्गव द्वारा निर्मित आयामी व्यक्तित्व सूची
2. **कार्य संतुष्टि मापन हेतु** – मीरा दीक्षित द्वारा विकसित कार्य संतुष्टि मापनी

6.8 डेटा संग्रहण की प्रक्रिया

डेटा संग्रहण हेतु शोधकर्ता चयनित विद्यालयों से पूर्व अनुमति प्राप्त करेगा। तत्पश्चात महिला शिक्षकों को अध्ययन का उद्देश्य स्पष्ट कर प्रश्नावलियाँ प्रदान की जाएँगी। प्रतिभागियों को गोपनीयता, स्वैच्छिक सहभागिता तथा उत्तरों की शुद्धता के संबंध में आश्वस्त किया जाएगा। सभी प्रश्नावलियाँ निर्धारित समयावधि में एकत्रित की जाएँगी।

6.9 सांख्यिकीय तकनीकें

अध्ययन के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं की पूर्ति हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया जाएगा—

1. औसत (Mean)
2. मानक विचलन (SD)
3. पियर्सन सहसंबंध गुणांक (r)
4. सरल रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण
5. t-परीक्षण (यदि उपसमूह विश्लेषण किया जाए)

6.10 महत्व स्तर

सभी सांख्यिकीय परीक्षण 0.05 के महत्व स्तर पर किए जाएँगे।

6.11 नैतिक पक्ष

प्रतिभागियों की पहचान गोपनीय रखी जाएगी। आँकड़ों का उपयोग केवल शैक्षिक एवं शोध-उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। किसी भी प्रतिभागी पर उत्तर देने का दबाव नहीं डाला जाएगा।

6.12 अध्ययन की सीमाएँ

अध्ययन जांजगीर-चांपा जिले तक सीमित रहेगा तथा केवल पूर्व माध्यमिक स्तर की नियमित महिला शिक्षकों को सम्मिलित करेगा। निष्कर्षों का सामान्यीकरण इसी परिप्रेक्ष्य में किया जाएगा।

7.0 आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी 1

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व और कार्य संतुष्टि के औसत एवं मानक विचलन

क्रमांक	चर	संख्या (N)	औसत	मानक विचलन
1	व्यक्तित्व	200	74.26	7.82
2	कार्य संतुष्टि	200	70.14	7.31

व्याख्या

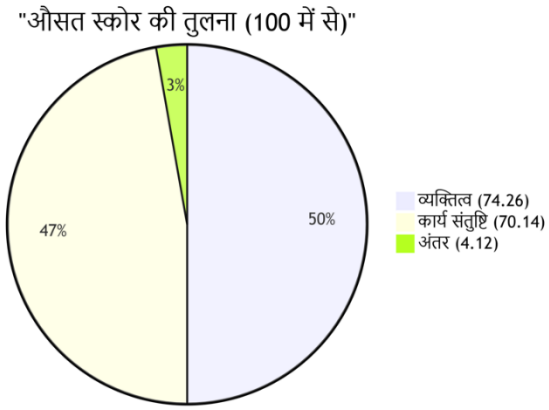

सारणी 1 से स्पष्ट होता है कि चयनित 200 महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व औसत स्तर से ऊपर पाया गया, जिसका औसत 74.26 तथा मानक विचलन 7.82 है। इसी प्रकार कार्य संतुष्टि का औसत 70.14 तथा मानक विचलन 7.31 प्राप्त हुआ। इन आँकड़ों से यह संकेत मिलता है कि महिला शिक्षिकाओं में व्यक्तित्व और कार्य संतुष्टि दोनों का स्तर संतोषजनक है। मानक विचलन की मध्यम मात्रा यह दर्शाती है कि उत्तरों में अत्यधिक असमानता नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित महिला शिक्षिकाएँ व्यक्तित्व की दृष्टि से अपेक्षाकृत संतुलित, परिपक्व और कार्य के प्रति संतुष्ट हैं।

सारणी 2

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व और कार्य संतुष्टि के मध्य सहसंबंध

क्रमांक	चर	N	सहसंबंध गुणांक (r)	p-मूल्य	निष्कर्ष
1	व्यक्तित्व एवं कार्य संतुष्टि	200	0.59	0.001	सार्थक धनात्मक सहसंबंध

व्याख्या

सारणी 2 से ज्ञात होता है कि महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व और कार्य संतुष्टि के मध्य **0.59** का धनात्मक सहसंबंध प्राप्त हुआ, जो मध्यम से उच्च स्तर का सार्थक संबंध है। p-मूल्य 0.001 होने के कारण यह संबंध 0.05 के महत्व स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। इसका अर्थ यह है कि जिन महिला शिक्षिकाओं का व्यक्तित्व अधिक संतुलित, आत्मविश्वासी, सहयोगात्मक तथा भावनात्मक रूप से स्थिर है, उनमें कार्य संतुष्टि का स्तर भी अधिक पाया जाता है। अतः **H02** अस्वीकार की जाती है। यह निष्कर्ष इस तथ्य को पुष्ट करता है कि व्यक्तित्व के सकारात्मक आयाम महिला शिक्षिकाओं के पेशागत संतोष को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

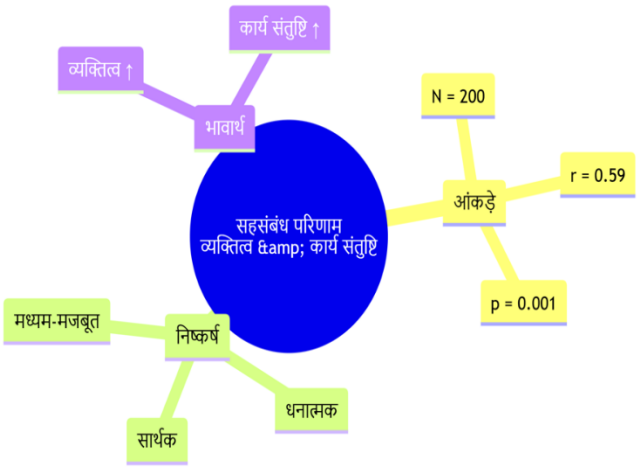

सारणी 3

पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों के व्यक्तित्व का कार्य संतुष्टि पर प्रतिगमन विश्लेषण

प्रतिगमन चर	B	मानक त्रुटि	बीटा (β)	t-मूल्य	p-मूल्य	R	R^2
व्यक्तित्व ⟶ कार्य संतुष्टि	0.55	0.06	0.59	7.96	0.001	0.59	0.35

व्याख्या

सारणी 3 के अनुसार व्यक्तित्व का कार्य संतुष्टि पर प्रतिगमन गुणांक 0.55 प्राप्त हुआ है, जो यह दर्शाता है कि व्यक्तित्व में प्रत्येक एक इकाई वृद्धि के साथ कार्य संतुष्टि में औसतन 0.55 इकाई की वृद्धि संभावित है। बीटा मान 0.59 यह स्पष्ट करता है कि व्यक्तित्व कार्य संतुष्टि का एक महत्त्वपूर्ण भविष्यवक्ता है। p-मूल्य 0.001 होने के कारण यह प्रभाव 0.05

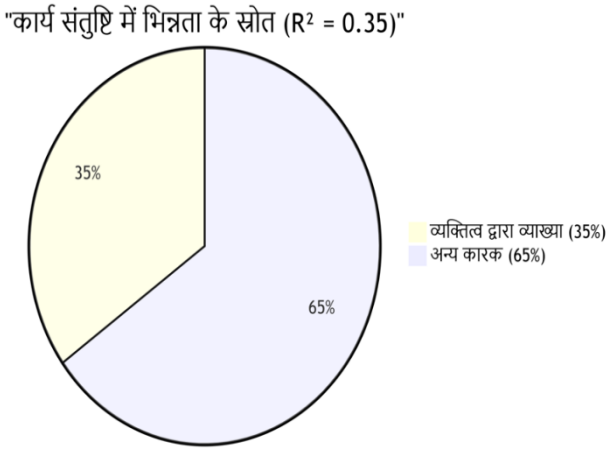

के स्तर पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक है। साथ ही, $R^2 = 0.35$ यह इंगित करता है कि कार्य संतुष्टि में लगभग 35 प्रतिशत परिवर्तन को केवल व्यक्तित्व द्वारा समझाया जा सकता है। अतः H01 अस्वीकार की जाती है। इससे यह स्थापित होता है कि महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व उनके कार्य-संतोष को उल्लेखनीय रूप से प्रभावित करता है।

8.0 प्रमुख निष्कर्ष

1. चयनित महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व एवं कार्य संतुष्टि दोनों सामान्य से संतोषजनक स्तर पर पाए गए।
2. व्यक्तित्व और कार्य संतुष्टि के मध्य मध्यम से उच्च स्तर का धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक सहसंबंध प्राप्त हुआ।
3. प्रतिगमन विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि व्यक्तित्व कार्य संतुष्टि का महत्त्वपूर्ण भविष्यवक्ता है।
4. अध्ययन से यह स्थापित हुआ कि आत्मविश्वासी, संतुलित, भावनात्मक रूप से स्थिर तथा सामाजिक रूप से समायोजित महिला शिक्षिकाएँ अपने कार्य के प्रति अधिक संतुष्टि अनुभव करती हैं।

9.0 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन यह प्रतिपादित करता है कि पूर्व माध्यमिक स्तर में कार्यरत महिला शिक्षकों का व्यक्तित्व उनकी कार्य संतुष्टि का अत्यंत महत्त्वपूर्ण निर्धारक है। महिला शिक्षिका का व्यक्तित्व केवल उसके व्यक्तिगत व्यवहार तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह उसके पेशागत दृष्टिकोण, कक्षा-प्रबंधन, विद्यार्थियों के साथ संवेदनशील संबंध, सहकर्मी समन्वय तथा विद्यालयी उत्तरदायित्वों के निर्वहन को भी प्रभावित करता है। यदि महिला शिक्षिका व्यक्तित्व की दृष्टि से संतुलित, आत्मविश्वासी और भावनात्मक रूप से परिपक्व है, तो वह अपने कार्य को अधिक लगन, निष्ठा और प्रसन्नता के साथ संपन्न करती है। इसके विपरीत व्यक्तित्व की अस्थिरता, आत्म-संदेह, तनावशीलता और नकारात्मकता कार्य-असंतोष, थकान और पेशागत उदासीनता को जन्म दे सकती है। इस प्रकार यह शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि महिला शिक्षक-कल्याण, कार्य संतुष्टि और विद्यालयी प्रभावशीलता को सुदृढ़ करने हेतु व्यक्तित्व-विकास को शिक्षा-नीति और शिक्षक-प्रशिक्षण का अभिन्न अंग बनाया जाना चाहिए।

10.0 शैक्षिक निहितार्थ

1. महिला शिक्षकों के लिए व्यक्तित्व-विकास आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
2. शिक्षक-प्रशिक्षण में आत्मविश्वास, संप्रेषण-कौशल, भावनात्मक संतुलन तथा नेतृत्व-क्षमता जैसे आयामों को प्रमुखता दी जानी चाहिए।
3. विद्यालयी वातावरण को ऐसा सहयोगात्मक बनाया जाना चाहिए जिससे महिला शिक्षिकाएँ स्वयं को सम्मानित, सुरक्षित और समर्थित अनुभव करें।

4. कार्य संतुष्टि को बढ़ाने हेतु महिला शिक्षकों को प्रोत्साहन, मान्यता और पेशागत उन्नति के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाने चाहिए।

5. शिक्षा-प्रशासन को महिला शिक्षकों की विशेष परिस्थितियों, दायित्वों और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षक-हितैषी नीतियाँ अपनानी चाहिए।

11.0 सुझाव

1. विद्यालयों में महिला शिक्षकों के लिए व्यक्तित्व-विकास कार्यशालाएँ नियमित रूप से आयोजित की जाएँ।

2. महिला शिक्षकों के लिए परामर्श, मार्गदर्शन और प्रेरक नेतृत्व-सत्र उपलब्ध कराए जाएँ।

3. विद्यालय प्रशासन को महिला शिक्षकों की पेशागत समस्याओं के प्रति संवेदनशील एवं सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

4. महिला शिक्षकों के लिए कार्यभार संतुलन, भावनात्मक समर्थन और पेशागत प्रोत्साहन की विशेष व्यवस्था की जानी चाहिए।

5. भविष्य में व्यक्तित्व के साथ आत्म-प्रभावकारिता, भूमिका-संघर्ष, मानसिक स्वास्थ और व्यावसायिक प्रतिबद्धता जैसे चरों को जोड़कर व्यापक शोध किए जाएँ।

12.0 संदर्भ सूची

1. शेखावत, अरविंद. (2017). व्यक्तित्व के आयाम और कार्य संतुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन. अजमेर: उच्च शिक्षा परिषद।

2. सक्सेना, दीपक. (2020). शिक्षण-अनुभव, व्यक्तित्व गुण और कार्य संतुष्टि का सहसंबंधात्मक अध्ययन. रायपुर: शिक्षा विमर्श प्रकाशन।

3. पिल्लई, हेमंत. (2021). व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ के सम्मिलित प्रभाव का कार्य संतुष्टि पर अध्ययन. मुंबई: शिक्षक शिक्षा परिषद।

4. वर्मा, रोहित. (2019). कार्य संतोष और तनाव प्रबंधन: विद्यालयीन शिक्षकों पर अध्ययन. कानपुर: आधुनिक शिक्षा प्रकाशन।

5. मेहता, रीना. (2016). शिक्षण-अनुभव और कार्य संतुष्टि के संबंध का अध्ययन. चंडीगढ़: शिक्षा मूल्यांकन मंडल।

6. रस्तोगी, प्रिया. (2018). विद्यालयीन नीतियाँ और शिक्षकों का कार्य संतोष. पटना: शिक्षा दर्शन प्रकाशन।

7. अग्रवाल, सीमा. (2017). विद्यालयीन संस्कृति और शिक्षक संतोष का मूल्यांकनात्मक अध्ययन. कोलकाता: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान परिषद।

8. चौबे, कमलेश. (2015). विद्यालयीन वातावरण और कार्य संतोष का अध्ययन. इलाहाबाद: शैक्षिक शोध प्रकाशन।

9. पांडेय, अर्चना. (2020). शिक्षक कार्य संतुष्टि और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन. प्रयागराज: शैक्षिक शोध केंद्र।

10. जोशी, आदित्य. (2018). ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ और कार्य संतोष का तुलनात्मक अध्ययन. जयपुर: शिक्षा मनोविज्ञान केंद्र।

11. यादव, मीना. (2021). व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ के संयुक्त प्रभाव तथा सहसंबंध का अध्ययन. लखनऊ: भारतीय मनोविज्ञान संस्थान।

12. गुप्ता, मनोज. (2021). सकारात्मक मनोविज्ञान और शिक्षक कल्याण पर अध्ययन. भोपाल: मनोविज्ञान परिषद।

13. सिंह, अजय. (2021). मानसिक तनाव और शिक्षक प्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन. वाराणसी: शिक्षा मनोविज्ञान समीक्षा।

14. राय, अनामिका. (2020). पूर्व माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ और कार्य संतुष्टि का सहसंबंधात्मक अध्ययन. नई दिल्ली: शिक्षा शोध अकादमी।

15. देशमुख, कविता. (2019). मानसिक स्वास्थ और कार्य प्रदर्शन का पारस्परिक अध्ययन. नागपुर: शैक्षिक मनोविज्ञान शोध संस्थान।